7th Paper

Date Page

Q. ताइपिंग विद्रोह पर प्रकाश डालें?

Ans:- आधुनिक चीन के इतिहास में ताइपिंग विद्रोह का अत्यन्त ही महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। इसने न केवल चीन में विदेशी शक्तियों के लूट-खसोट का विरोध किया, बल्कि सदियों से स्थापित निरंकुश एवं भ्रष्टाचारी मंचू शासन के जड़ों को भी झकझोर दिया।

(1) ताइपिंग विद्रोह के कारण:- प्रथम आंग्ल-चीन युद्ध के बाद के दुर्दिन शुरू हो गए। चीन का द्वार विदेशियों के लिए खुल गया था और वे सब मिलकर चीन के साम्राज्यवादी शोषण की तैयारी कर रहे थे। उच्चर शोषण, भ्रष्टाचार आदि के कारण चीनी लोगों का जीवन दूभर हो रहा था। जनसंख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही थी जिसके कारण खाने का प्रश्न विकट हो गया था। अफीम के व्यापार ने चीन की अर्थव्यवस्था को छिन्न-भिन्न कर दिया था। विदेशी सामानों की आपूर्ति से देशी उद्योग-धन्धे नष्ट हुए जा रहे थे और देश की चाँदी निकलकर बाहर चली जा रही थी। गरीब चीनियों पर कर का बोझ पहले से ही अधिक था, लेकिन प्रथम अफीम युद्ध में हारने के बाद चीन ने एक भारी रकम क्षतिपूर्ति के रूप में देना स्वीकार कर लिया था। इस रकम को अदा करने के लिए चीन की सरकार ने जनता पर और कई नए-नए कर लगाए। बहुत-से किसानों को अपनी जमीनें बन्धक रखकर या कर्ज लेकर इन करों को चुकाना पड़ा। कुछ लोगों को अपनी जमीन बेचनी पड़ी और वे पूरी तरह कंगाल हो गए। उन्हें मजदूरी का सहारा लेना पड़ा। चीन की गरीब जनता ने अपनी इस दुर्दशा के लिए मंचू अधिकारियों को दोषी बतलाया और उसके मन में यह भावना घर कर गई कि जब तक मंचू-शासन का अन्त नहीं हो

जाता तब तक उसकी दशा में किसी तरह का परिवर्तन असम्भव है।

चीनी लोग बड़े आत्माभिमानी होते हैं और राष्ट्रवाद की भावना उनमें कूट-कूटकर भरी रहती है। चीन के लोग संसार में अपने को सर्वश्रेष्ठ जाति का मानते थे और अपनी सभ्यता के समक्ष वे दूसरों की सभ्यता को हीन मानते थे। इसी कारण, वे विदेशियों को चीन में घुसने देना पसन्द नहीं करते थे। पर, मंचू-राजाओं की कमजोरी से विदेशी लोग लाभ उठाकर चीन में धीरे-धीरे प्रवेश कर चीन की सभ्यता को भ्रष्ट कर रहे थे। 1839-42 में प्रथम अफीम युद्ध के बाद विदेशियों के दाव चीन का अपमान बेहद ज्यादा हो गया। युद्ध में चीन को पराजित कर ब्रिटेन ने उस पर सन्धि थोप दी और चीन में कई अनुचित सुविधाएँ प्राप्त कर ली। इस सन्धि के कारण चीन के माथे पर कलंक का टीका लगा और उसका राष्ट्रीय गौरव तथा स्वाभिमान नष्ट हो गया। चीन की जनता विदेशियों की शरारत, उनकी उच्छृंखलता और बढ़ते हुए दुष्प्रभाव को देखकर अत्यन्त चिन्तित थी। वह भयभीत हो गई थी और सोचने लगी थी कि यदि समय पर यूरोपियों के बलात प्रवेश को रोका नहीं गया तो चीन ~~के माथे पर कलंक का टीका लगा~~ तुरन्त ही पाश्चिम साम्राज्यवाद के चंगुल में फँस जाएगा। चीन के सभी वर्ग और सभी तबके के लोग इस तरह का अनुभव कर रहे थे लेकिन वे असहाय थे। मंचू-शासन में उतनी शक्ति नहीं रह गई थी कि वह विदेशियों के प्रतिरोध कर सके। अतएव, देश

के गौरव की रक्षा के लिए मंचू-शासन का अन्त आवश्यक प्रतीत हो रहा था। ताइपिंग-विद्रोह का एक कारण हम इस स्थिति को भी मान सकते हैं।

चीन का समाज आर्थिक दुर्दशा और राष्ट्रीय अपमान का केवल अनुभव ही नहीं कर रहा था, वरन् देश को उनसे छुटकारा दिलाने के लिए सक्रिय भी था। उसे पूरा विश्वास था कि चीन का प्राचीन गौरव फिर से तभी स्थापित हो सकता है, जब भ्रष्ट मंचू-शासन का अन्त हो और इसके लिए विद्रोह की आवश्यकता थी। विद्रोह का वातावरण तैयार करने में उस स्थापित गुप्त समितियों ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। इस तरह के कई संगठन कायम हुए, जिन्होंने देश में विद्रोह की भावना भड़काई और लोगों को आर्थिक सुधार तथा राष्ट्रीय गौरव के लिए मर-मिटने के लिए प्रेरित किया। इन्होंने इस बात का पूरा प्रचार किया कि मंचू-शासन का अन्त होना परम आवश्यक है और देश में एक ऐसी सरकार की स्थापना करना जरूरी है जो विदेशियों के ईंट का जवाब पत्थर से दे सके। भूमिहीन कृषकों और मजदूरों को इन गुप्त संगठनों ने अपनी ओर आकृष्ट किया और ताइपिंग-विद्रोह का व्यावहारिक पृष्ठाधार तैयार हो गया।

इसी समय, क्वांग-तुंग में एक भीषण अकाल पड़ा जो ताइपिंग-विद्रोह का तात्कालिक कारण सिद्ध हुआ। 1849 ई० का यह दुर्भिक्ष कई दृष्टियों से भयानक था जिसके हजारों-हजार व्यक्ति मर गए। ऐसे संकट के समय मंचू-शासन के पदाधिकारी हाथ-पर-हाथ रखकर बैठे रहे। इन्होंने अकालपीड़ित जनता की सहायता करने का कोई प्रयास नहीं किया। शासन की इस अकर्मण्यता ने सब्र की बाँध तोड़ दी और जनता के लिए उतावली हो गई।

② ताइपिंग - विद्रोह का नायक :- ताइपिंग - विद्रोह का नेता और जनक हुंग सिंयू चुआन नामक एक व्यक्ति था। 1814 ई० में एक मामूली किसान के घर में, जो कैण्टन से तीस मील उत्तर के एक गाँव में स्थित था, उसका जन्म हुआ था। युवा हुंग ने स्थानीय परीक्षा तो पास कर ली थी, परन्तु प्रान्तीय परीक्षाओं में वह निरन्तर असफल होता रहा। 1837 ई० में बीमारी के समय उसे कुछ सपने आए जिन्हें उसने ईश्वरीय दिव्यदर्शन समझा। इस विलक्षण अभ्यास का पूरा अर्थ उसने बाद के कैण्टन के एक चीनी धर्मप्रचारक द्वारा दी गई पुस्तिका 'युग के उद्बोधन के लिए शुभ शब्द' पढ़ने के बाद समझा। अपने आभासों के इस अध्ययन के उपरान्त हुई व्याख्या ने उसे एक नए धर्म-प्रवर्तन की प्रेरणा दी। इस धर्म में मूर्तिपूजा का विरोध तथा कई अन्य ईसाई धर्म की भी शामिल थीं। कैण्टन के एक पादरी, इसाकह रॉबर्ट्स के सम्पर्क में आकर हुंग अपने धर्म में ईसाई धर्म के तत्वों को प्रमुखता दी। अपने प्रान्त में कुछ लोगों का धर्म-परिवर्तन कर हुंग कुछ साथियों सहित क्वांगसी प्रान्त जा पहुँचा, जहाँ वह अध्ययन और धर्मप्रचार करता और ईश्वरीय अभ्यास पाता रहा। उसके अनुयायियों की संख्या तेजी से बढ़ रही थी। केन्द्रीय सरकार ने घबराकर इस धर्म पर पाबन्दी लगा दी, लेकिन हुंग का कार्यकलाप चलता रहा और उसके अनुयायियों की संख्या में निरंतर वृद्धि होती रही।

③ ताइपिंग विद्रोह :— अब हुंग ने अपने ईसा मसीह का छोटा भाई एलान किया और कहा कि भगवान ने उसे मंचुओ के विनाश के लिए इस पृथ्वी पर भेजा है। उसने घोषणा कर दी कि वह ईश्वरीय सम्राट है और वह एक नए शासन, 'ताइपिंग' (पूर्ण शान्ति) की स्थापना करेगा। इस नारे पर चीन की असंख्य जनता उसके पीछे हो गई। 1850 ई० तक उसके अनुयायियों की संख्या तीस हजार हो गई। इस गति विधि ने मंचू शासक के कान खड़े कर दिए और हुंग के आन्दोलन को कुचलने के लिए कई तरह की कार्यवाहियाँ की गई। इस पर हुंग ने अपनी ओर से सैनिक गतिविधि शुरू कर दी। नवम्बर 1850 से फरवरी, 1851 के बीच कई जगहों पर हुंग के अनुयायियो तथा शाही फौजों में मुठभेड़ हुई और शाहि फौज कई बार पराजित हुई। 25 सितम्बर 1851 को उन्होंने युंगान पर अधिकार कर 'महान शान्ति का दैवी साम्राज्य' (ताइपिंग तीएन-कुओ) की घोषणा की। हुंग सियू चुआन इसके 'द्वितीय शासक' (तीएन वांग) के पद पर आसीन हुआ। इसके उपरान्त, ताइपिंग-विद्रोहियों ने अनेक सैनिक सफलताएँ प्राप्त की। उनकी सेनाएँ क्वांगसी से हूनान में घुस गई। 1852 ई० में उसकी राजधानी चांगशा पर उनका अधिकार हो गया। अब ताइपिंग-विद्रोही यांगत्सी ~~विद्रोही~~ की घाटी में बढ़ने लगे और मार्च में नानकिंग तक पहुँच गए। हुंग ने नानकिंग का नाम बदलकर तिएनचिंग (द्वितीय राजधानी) रख दिया और वहीं अपनी ~~स्थान~~ राजधानी कायम की। शाही सेना धारशाही थी, किन्तु विद्रोहियों का जोर भी धीरे-धीरे खत्म होता जा रहा था और वे यांगत्सी के ऊपर में कोई प्रगति नहीं कर सके। मई, 1853 में एक सेना

Date
Page

में चली की ओर बढ़ी, लेकिन मंगोल घुड़सवारों ने उनका काम तमाम कर दिया।

(4) विद्रोह का दमन :- स्थानाभाव के कारण विद्रोह का विशद वर्णन कठिन है, लेकिन इतना तो कहना ही पड़ेगा कि 1853 ई॰ से 1854 ई॰ तक नानकिंग पर ताइपिंग - विद्रोहियों का शासन रहा। यह व्यापक विद्रोह जो 1851 ई॰ में शुरू हुआ था और 1864 ई॰ में जाकर समाप्त हुआ, केवल मंचू शासकों की निर्बलता के कारण ही सम्भव हो सका था। आरम्भ में ही स्थायी सैनिक सत्ता ने नागरिक सत्ता कायम रखने में मदद देने में अयोग्यता का परिचय दिया। इस हालत में यदि ताइपिंग - नेता कुछ होशियारी के काम किए रहते तो वे मंचू - वंश का अन्त करने में सफल हो जाते। किन्तु, विद्रोह ने रचनात्मक नेतृत्व का सृजन नहीं किया। इसमें जो योग्य व्यक्ति थे वे विद्रोह के प्रारम्भ में ही मार डाले गए। हुंग केवल कुछ अयोग्य और कट्टरपन्थी नेताओं की सलाह पर चलता रहा। यह आन्दोलन की असफलता के लिए पर्याप्त था। वस्तुत: ताइपिंग - विद्रोह अपनी ही कमजोरियों के कारण समाप्त हो गया।

ताइपिंग - विद्रोह को दबाने में त्सेन कुओ - फान नामक एक योग्य केन्द्रीय अधिकारी ने महत्वपूर्ण भाग लिया। उसने अपना एक अलग सैन्य संगठन कायम किया और ताइपिंगों से लोहा लेता रहा। धीरे - धीरे उसने यांगत्सी प्रान्त से विद्रोहियों को खदेड़ कर उनकी राजधानी नानकिंग पर घेरा डाल दिया और अन्त में उसे जीत लिया। इस क्रम में विद्रोही हमेशा समुद्र की ओर दबते गए जहाँ उन्हें दूसरी शक्ति का मुकाबला करना पड़ा।

विदेशियों ने इस समय विद्रोह को दबाने में मंचू शासकों की भरपूर सहायता की।

(5) ताइपिंग - विद्रोह और विदेशी :— ऐसे व्यापक तथ्य मंचू शासक के अस्तित्व के खतरे में डालनेवाले ताइपिंग - विद्रोह और उसकी सरकार की ओर विदेशी राष्ट्रों का ध्यान जाना स्वाभाविक था। जब 1853 ई० में विदेशी बस्ती की सीमा - स्थित शंघाई का चीनी नगर विद्रोही दल के अधिकार के साथ अपने सम्बन्धों की व्याख्या का महत्व समझा। गृहयुद्ध विदेशी बस्ती तक पहुँच चुका था और शंघाई पर उनका आक्रमण होना ही वाला था। इसी समय फ्रेडरिक टी० वार्ड नामक एक अमेरिकी ने शंघाई के ब्रिटिश अधिकारियों के विरोध के बावजूद एक रिसेह तैयार किया जो विद्रोहियों के कब्जे से कुछ कस्बों को छुड़ाने में समर्थ हुआ।

इस समय चीन की केन्द्रीय सरकार की सेना ब्रिटेन और फ्रांस के विरुद्ध उत्तर में युद्ध में व्यस्त थी। तीन्तसिन (1858 ई०) और बाद में पीकिंग (1860 ई०) की सन्धि हो जाने के बाद विदेशियों ने ताइपिंग - विद्रोह को दबाने में मंचू सरकार का समर्थन करने का निश्चय किया। उनके हक में यह आवश्यक था। ताइपिंग - विद्रोहियों का एक लक्ष्य यूरोपीय साम्राज्यवाद की जड़ खोदना था। अतएव, विदेशी चाहते थे कि चीन में मंचुओं की कमजोर सरकार बनी रहे, ताकि वे पूरी तरह मनमानी कर सकें। अत: फ्रेडरिक टी० वार्ड ने मंचू सरकार की पूरी सहायता की। उसने जासूसों के जरिए विद्रोहियों के कमजोर ठिकानों का पता लगाया और मंचू - शासन को ऐसे ही स्थानों पर प्रतिकारात्मक कार्यवाही करने का परामर्श दिया। बाद में पाश्चात्य देशों ने मंचू सरकार के समक्ष यह

प्रस्ताव रखा कि यदि वह उन्हें तीस हजार तैल चाँदी देने को तैयार हो जाए तो विदेशी फौज ताइपिंग - विद्रोह को दबाने में उसकी मदद कर सकती है। सम्राट इस - इस शर्त को मानने के लिए तैयार हो गया। तत्पश्चात सी० जी० गोर्डन नामक एक अँगरेज अफसर की अधीनता में एक सतत विजयी सेना का संगठन किया गया। अँगरेज इस निष्कर्ष पर पहुँच चुके थे कि विदेशी हितों की रक्षा मंचू - सत्ता कायम रखने में ही है। अतः फ्रांस, रूस तथा संयुक्त राज्य अमेरिका की सहायता से ब्रिटेन ने विद्रोह को कुचलने का पूरा प्रयास किया। इस प्रकार, ताइपिंग - विद्रोह को विदेशियों की सेना की मदद से मंचू - सरकार ने दबा दिया।